

नयान् उच्यते विप्रविश्याद्भक्तं सुखदुःखयति न गीरुगवान्नायकं पाथनायात् ॥ ॥
 जननी सर्ववृक्षानां सर्वविप्रसूयनी अगम्या सर्वदुःखानां महाविद्यावसूप्रिया ॥ ॥
 सुखदुःखयति वसुधावाक्यी गार्थिश्च यथावसानिर्कं समस्ततथागतयो मा मरुया उवा
 हन्वन्नाना विप्रद्वयलया हाउ ॥ समस्तमर्कदुःखकोउ ग्वन्त २ ॥ अद्यावत् २ अगः
 मयापद्वयलया हाउ ॥ समः ॥ सुयां प्रियरुयाउ विष्ठाक ॥ ॥ अस्यावधौ वली २
 सुखाउदृष्टिमानवान् विप्रविश्याद्विष्ठाका ॥ मोनपटकि कदाचन जूचिकयाति
 उद्याति प्राप्नुवन् कनमंसय ॥ हन्वन्नाना वलीया धनलीया ० मौगुदं हां मा रं ॥

२

सनयास्य त्रागयारयस्तकयारय ग्वन्तं मालिउमषु हन्वन्संयलिधनसां चिकनाया
 हां चिकनार्यय मरुयकविप्रविष्ठाक वकणीमास सिद्धरुगवान् आहादस विष्ठाक
 ॥ ॥ सुखदुःखयति ॥ कीदृशीरुगवान्मातावसुंधाविलीयुन कथकनयूजाविधान ॥ ॥
 सुखदुःखयति रुगवान् ॥ याकपाथनायात् जूमापत्रमं ग्वनीधयाक्रोगथ
 वाह उक्तपत्रमं ग्वनीध ॥ यायूजाविधान गथमालाउवान् अंसं सुखं जि
 न्मुहपसन्नरुमालधक सुखदुःखयति ॥ गीरुगवान्नायकं पाथनायात् ॥ ॥
 रुगवान्माहा ॥ रुगवान्कया सम्यक सर्वसत्त्वार्थमोदताव जनयासाधनं युग्मं वली

वापिनिधसम॥ थुगुतरदं सुवदुदपतिपाथनायाक खडाउ रगवानं आह्लादस
 विष्णुग, हं सुवदुदपति छु छु कक दामागं संशान उद्वात्रया उनिमिदि किनक
 नरं दंडा, अक्रपवमं गवीशयू गथिं स्वर्गमल्ययातालयां मासइयाउयां
 धधर्मइयूगथिं सत्व प्रासिदक उद्वात्रइयू थथिं कपवमं गवीया
 पूजायाउ विधिपूर्व किनक नरं द॥ ॥ दं ग यिथा मिहं साधु सु
 वसनसिधमया यनविहान मा गं सर्वसंपदिमापुयाइ ॥ **यूनवर्त रुचं सुवद**
 गुरुपतिया खाल स्याउ रगवानं आह्लाद र विष्णुग, हं सुवदुदपति छु

3

नमनसु वयाडाउ छु छु सगपाग खेम वृद्धि वक्रखडा थुगुनिचिरुगीनर
 मरं कून ग्वक सनं थथिं उत्रिह मगावरातल उक्तयाग संपूर्ण तउ चरिह
 आदि नवनल धेउ राजसठे किं ह्यादिलायू ॥ ॥ तविहं ० यकिदवा आया
 धिताः य्याधिमागव ग ॥ अपूणालरातपुण सधनालरतंधर्त ॥
 रुनां आह्लादस विष्णुग हं सुवदुदपति ग्वक रं गी वसुधनायद
 विप्रवत धनवपं वाति उ ॥ उक्त स मसकदव मनुष्य रत पुन
 ॥ येनवादि गतं सुनानं भावकं मरुतं तोतोयाधितकलं सां योधित

१ गव्यार्थापुत्रमदशाउवाच

पीठलथमरुडा जुधवासमानमइक्रयासमानदयुख महादविदइ
याडावातमा महाधनाग्रइयाडाशागवकइ युधथिगवतथधकं गुही
वित्र॥ ॥महाधनामहाशाग्रसपन्नपनिवानकै४ किमेववइ तावाकं स
प्रयययकाजिही॥ ह मरुदगृहपतिधधर्मयापरावंतथथिग
पदाथेलासंलिमहा रागमानिइयाडा काय क्कायक १५५
थंरयातिनीपनिधकां पूलेयाडाडा महाजुतद ननुकनपं वा निअ
रुलखअदिककुला १ ६६ममनरुललाकधकगवाननजुहावि

लि॥ ॥यथकविधिनायनवतंवापिवधनयगु रुकूराडयदोमासिरुगीयानि
धिसारन॥ गव्यमनरुनं यनभेधनीवसुधामादेवियावत गथविधिमाल
थंउगुलिविधिं राडवकू रुगीयाकू गव्यसंनवतदनु ॥ ॥माघदश
तथमरु रुगीयाया विधयेत१ मासिमासिरुवलेन सदाहृय
वर्गवत्र॥ अथवा मा यरुकरुगीयाकू रुव नयशपति सदाव
तधनवयु उक्रयाग थथिह रुलमायु ॥ ॥रुलपूगवाथवापुगी विरुवा
विदुतीतथ उपाजिकउपाभीव अयापियवजातया ॥ ॥हृगृहपति

धर्म तडा २ सतपागुनया धर्म श्या उवां महा कुलवक्तनं कुलवक्तया मुनि
 तता धं विदुर्न विदुनीन उपास उपासिक यानि सनं सवता २ जातिनं वत
 धवलपतडा वक सुत्र दृष्ट पतियोत रुगवानं आदोदसे विष्णव ॥ ॥ पान
 वृद्धयतीर्थगत्याः नयकात्रयम् मलसात सुविना मरुसात सु
 कात्रयम् निरिआवम नयकात्रयम् मलसात सुविना मरुसात सु
 डा सानया दाडा आचमनया दाडा पत्र गयकायाडा पत्र भवये ॥ ॥ सुवि
 मयुयम दृष्टं जीवता नरुकि वसत्र तीर्थे दकं वरुषु मं यूनव सुम द्वादश

न ॥ दृष्टं दृष्टं धर्मिन् पत्र मं ग्वरी आचमन धवययात सुविदुमुनतियाडा
 पत्र मं ग्वरी आरुकि सन्नातयाडा सीन सखा वरिडाडा मन हर्षमान या दाडा
 दलख तीर्थयात्रे वरुषाडा पृष्ठु घटया दाडा सीन व मुन हि दाडा स्य पना
 याडा ॥ सुविदुमो त नयेव यूयु क मरुत ममुलं याष्टिकोर्थ स
 गृहवा पत्र गृहवा सूरु सूरु न चदन न चरुन स ममुल कं दत्वा स्य प
 पय कल संचां वरुषि पत्रि वगय ॥ द सुत्र दृष्ट पति धर्मिन् पत्र मं ग्वरी
 या ममुल दयकं मर्गलया व मूर्थीत अडा गृहवा सवया गृहवा गन सुवि

अदृष्टादानं काममिच्छावकायिकं ॥ दृष्टदृष्टति अशरीरं यादापापस्य ता
 दृष्टधनसा जीवात्मास्यान मवया मतदावशु क का ॥ परशु परशु नृप
 हनेयो ॥ अत आधावपाप ॥ ॥ वाविकं कत मवशु विधं मिखा बोदं ये
 सूर्यपाल सूर्य मूर्तिनिन पत्राय (प्रति) ॥ दृष्टदृष्टतं वचनं यादापा
 पापताविधि कृच्छ्र म सखिस्तु कृत्व वृत्तस्तु ॥ मवया तमाल
 वचन वि ॥ असखिस्तु तादाता जाकपनिस्तु ॥ अर्थिततापापकं मद ॥ ॥
 मान संकर म विविधं अविद्यायापालं मिच्छादृष्टि (प्रति) ॥ दृष्टदृष्टतं

मत्तनयादापापस्य ता दृष्टधनसा मवमात्रकसावय अयापालया ॥ अ
 स्नातनरात्रय दव गुनू व म म माल काल ये अर्थितापकं मद अत नैजि
 तापापता जात्रयं तापाप मड ॥ ॥ अत दमकृग तापापनिवर्त्तनी या
 दमकृग तातां कर्म रुतं नृत्त ॥ दृष्टदृष्टतं अजितापापता
 लायात पूर्वजर्मन यावेजिन संकप मागकन दंदा ॥ ॥ पा
 लमिपार्ग अयायु ॥ मवया जीवनिता तता अ जीवकायान आयु म
 दय कृ न आयुशर्त ॥ ॥ अदृष्टादानी असागेद विदता ॥ मवया म

पलि दानयादान नयसु द्वा संकष्टकयाउा महादविडइल ॥ ॥ काम
 मिश्रमवावाग पिश्यसायो सुयुगादिविजागता ॥ पुनर्वीव हनैरगवानैअ
 हादत हगृहयनि मवयाकु गहनयादाया रुलन थअमीतिमउा सुयु
 गादिउा विजागइ ^{माभनालि} याउा इयू ॥ ॥ मिखोवादाइ ^{माभनालि} अवनननेउ ८
 सदासविरुतारुल ^{माभनालि} प्रियनामिगसदकलरुषिपरिस्थाग ॥ हगृ
 हयम असखवहायापाप लोकन निदनायायु कडापापन लोक
 नअमाययायु जाककउा हायापाप सदासर्वकारे अयागृहस कलह

विपरिहिन गालगिउा मषु विपरिहिन इयू ॥ ॥ घालका ^{अम} नारु अ इर्नध
 असंरिन्नपवापाग अनादयवाकोलोकषु रिन्नरुल ॥ हगृहयम मवमय
 यार्थ वालावचनेविद्यायापर्म थअमनयाथअसुखमदस लोकन नि
 यादमयायु मवरु ^{पेन इयुगार} यापापन काकवचनेइस लोकसे रिन्नया
 हाउा सुखतयाउा न ^{पेन इयुगार} य ॥ ॥ अविद्यान अहानमूर्खरुल आपा ^{माभनालि}
 दा निवने ^{पेन इयुगार} यामाहीतवम मिथु ^{पेन इयुगार} दृष्टिनीवहीनजातिषु उत्पलिरुल ॥
 हगृहयनि थअअधिकानमइयु अयादाहल हानमदयाउा अलइयु
 अयापाल

रुन्व मवस्माय सावपायारुल तउं २ लोकव वीर्मा लागकाउ आपदाउ
 नाकाउ इयु रुन्व सखकादायापयं दारिद्र इयाउ हीनजाति कुल
 मऊमो इयु ॥ नस्माद्वमकुशलं पत्रित्यजित्ता वरं धनं यत् ॥ दंष्ट्र
 ति युनियामेहि ~~मनिमनि~~ जिगापायं तालताउ शिव
 सुधनादवीयायत धनलपि कृति धत्वर्थं दं निष्ठापनि ध
 यादां न अपापधक सियाउ मनसा वावा कमाना एकत्वयादाउ गी
 वसुधनाया वगधनवपिउं पयगुहं सिष्ठापनि धर्म साविकउ नाना

६

तत्रहया लाक दंउं गवकमर्क वमीत्मा पापात्मा पूर्वकर्मया जेतापाप
 या धर्मया रुलंन माना नूधनाय उत्रिय प्रीति अपीति जिनंद वि
 याट उच्च नीव रुलंन अज्ञान कत्रह आपदा कर्कग अ समरु लोकयाइ
 क पूर्वकर्मयारुलं थकाइलधक गीरगवाने सुखदृष्टयनि
 यात आह द स विष्ठा ता ॥ समंवाहउं मीरदर्म आचार्यपाः
 धाय दिगदिगलाक धीउं संनिप्रतिता वृद्धा रगवन्ता वाधिसलाय अरुमम
 कंतामा वृद्ध धर्म सद्य प्रगवलं गहामि ॥ दनाथदगुन गधकनयात्र सनअ

दमविज्जात अर्थं जिमिथउथउ नामक्रिथडाउ गवलगा दमदिगलाकधा
 उमं वृद्धदवतानगुलिनसरादयकाउविज्जात अलगा जिमिसन जीवसुध
 गदविया धवमदडाउ वृद्धधर्मसंघयागवलाउने धक थुगुतत्रह गुलया
 कयाथनायाग ॥ ॥ ॥ पुनत्रपरमसत्ताहनीउ रुदक समसुगु १०
 वृद्धवाधिसत्त्वसू ॥ मा ॥ तापितगो तदंयाग संगम्य सर्वसत्त्वसुवध
 ॥ पुनत्रवदन्ती गुन्या कयाथनायाग रुताथरुगुन छत्रपात्ररुगुगधि वृद्ध
 धर्मसंघं छं धयाकं समसुगुवृद्धवपाल विसंघन मामं वृवं छलपाल

रुन्दं समसुपालियार्त उपदं विद्याउ उद्यात्रयासविज्जाककल ॥ ॥ अस्मासि
 ० रुजमनि रुवाकवेषू मयापापकं कर्मरुतं ॥ अकावितंवा अनुमादिगं तगा
 सर्वेकधा पिउ ० ० ० ० ० ० ॥ रुताथरुगुन जिमिसन हथु रुमयापापद
 गसां थुगुलिजर्मयापा पादगसां सिमंमसिमं वसं सिनहन धर्म
 यूर्तु यादायापापन थु गुलिजर्मस कर्मसागलात धयापसं वृद्ध
 गवलमूडाउ लडाउ धवसुधदवीया धर्मनमावकाउ विसु विज्जाकन ध
 कयाथनायाग ॥ ॥ जीवसुधवया ॥ अगुगुवृद्ध वाधिसत्त्वसांतिक् सर्वपापं

पतिदभयानि। याननसमनं प्रतिष्ठावयामि॥ हनाथदं गुनु, धक, गुनुहुअनंजी
 हाउ, गथजानिकं, वृद्धहुअनं, वाधिसखपतिसन, ससाउडाव, नितिहिन धर्म
 भवलायात, अर्थसिध्दमिसं, गुन्याकयाथनायात, जिमिसन, सिसमसिस, याव
 याका, जिमिसनतालन, धना, धर्मसमनपं, गुन्यामनालोन॥ ॥ नि
 खगीत, वादिनं, मालाः, गन्धविलयनं, कुरुक, मदासयनं, सुवर्णमूया
 दिशदकं॥ **हमिष्यपति**, जीवसुधावादे विद्या, वतधनपं, इलहाउ, याखनः
 इय, नानावाद्यध, महानं, स्नानमालनकया, नानाप्रसाक, विकनं, यनया
 ॥ ह, नाना, रंगअसतनी, गाजाउ, आसनस, वान, उहा, आदिधं, नाना

वशुकया, तिसानति, धसधु, तालनमाल॥ ॥ मांसातिर्षहा, चत्रखतेप्रभव
 सुगामनादिकं पशु, विप्रमं, वगधालेक॥ **हमिष्यपति**, हनं, ना, हा, मद्य, पवदस्य
 वि, विकं, धसंधु, कायगउगु, वशुक, नैवै, गजिव, रान, ल्यादि, धतताल
 गाउ, ग्यनसं, धवगध, वलया, अक्रयात, अवर्थ, मनावथपुरुहुउ
 ॥ ॥ अथवायावाजी, वं, याव, नराणीममिनी, याव, ल्यादि, दयाकन, ना
 वर, जीवसुधावादे, नकायमानसन, समोक्षत्रय॥ **हमिष्यपति**, हलाहन
 सा, गवनागी, जीवमवहनपावान, अथवा, मरुतसा, धनियानागीउहाउ, क

॥ श्रीगुरुमादवी अस्त्राला ॥ जगत्पति ॥ श्रीगुरुमादवी अस्त्राला ॥ स्वामी ॥ ११

[illegible]

13

५१२३

[illegible]

३ धनकैलसिजय॥ उं सुवेजलुडायसाहा॥ धन२॥

ॐ शिवाय नमः । यत्किंचित् । क्रियासिद्धये ॥ धनवृद्ध्यै

अथ ॥ ॐ वसुधैवा कुतस्तथा ॥ १ ॥

॥ उं गी आये वसुधा गोवाध्यांग दृढ कवच वशु स्वाहा ॥ वरुका सया दशन ग ॥ धन अर्थ
 कोसक ॥ युति ॥ वसुधा वासदा नत्वा दात्रिडा लुवगा वली ॥ साधना यायका पद
 प्रश्री सिद्धि वनयदा ॥ धन अर्थ यागक ॥ उं समय सोम्य समय कत्रिमदा समय
 स्वाहा ॥ उं उर्क उर्क वष ॥ ली यवषनी निस्था डनी जीवसुधन अर्थ पतिष्ठ ॥ १४
 स्वाहा ॥ ककका विगमनुमा दिगहि तं दाया ना मकी वशी वसुधा वासदा वका
 यवत्र एकमला य अर्थ पतिष्ठ स्वाहा ॥ धननी यच्छ दौ खानवा यको ॥ द्रौल
 मिस ॥ उं नमा वल गया य गज जीवं सर्व कली हल हस्त दिव्य पूर्य जीवसु

दानपत्र धर्म (मोहि सनन च विना नो न
 कन धन लक्ष्मि दाने न

१ नी यवषनी स्वा
 वागक ॥

शी २

अत्र वसुधा विवकनी मन्त्रिंक प्रियुद्धि कत्री मम कार्क सिद्धि कत्रि स्वाहा
 ॥ अ२१ ॥ यं ला द्यं शु ॥ ॥ धनसाधकाल वापन ॥ ॥ उं सोम्य वृष स्वा
 हा ॥ उं गी दिव्य वृष स्वाहा ॥ उं दी फ वृष स्वाहा ॥ उं गी वृष स्वाहा ॥ उं गी हान वृष
 उं गी यक्ष वृष यात्र मित स्वाहा ॥ उं गी वज्र सत्व हृदय स्वाहा ॥ उं गी मूलद स्वाहा ॥ उं
 उं गी मूलद मति स्वाहा ॥ उं गी मंगल स्वाहा ॥ उं गी समंगल स्वाहा ॥ उं गी मंग
 लमति स्वाहा ॥ उं गी आन स्वाहा ॥ उं गी अलेश स्वाहा ॥ ली वलेश स्वाहा ॥ उं गी

स्वा
 ली का उम नम ॥

ॐ यत्नलस्वाहा ॥ ॐ श्री उद्वाटनिस्वाहा ॥ ॐ श्री उद्वादिनीस्वाहा ॥ ॐ श्री मलयवतिस्वा
हा ॥ ॐ श्री संस्रवतिस्वाहा ॥ ॐ श्री वनवेतिस्वाहा ॥ ॐ श्री धनवतिस्वाहा ॥ ॐ श्री २
मतिस्वाहा ॥ ॐ श्री यशामतिस्वाहा ॥ ॐ श्री मूलस्वाहा ॥ ॐ श्री विमलस्वाहा ॥ ॐ
श्री नृमस्वाहा ॥ ॐ श्री निर्मलस्वाहा ॥ ॐ श्री मलनामनीस्वाहा ॥ ॐ श्री स
न्यस्वाहा ॥ ॐ श्री अननष्टस्वाहा ॥ ॐ श्री विननष्टस्वाहा ॥ ॐ श्री धिननष्टस्वाहा
॥ ॐ श्री विश्वकमिस्वाहा ॥ ॐ श्री मुद्रसिलस्वाहा ॥ ॐ श्री विश्वनिषिस्वाहा ॥

१५

ॐ श्री विश्वन्यस्वाहा ॥ ॐ श्री आवमतिस्वाहा ॥ ॐ श्री आकर्षतिस्वाहा ॥ ॐ
श्री अंकस्वाहा ॥ ॐ श्री मंदुस्वाहा ॥ ॐ श्री परिक्रस्वाहा ॥ ॐ श्री अमाद्या
कमजः ॥ ॐ श्री हस्तः ॥ ॐ श्री सिद्धिप्रवरुतिस्वाहा ॥ ॐ श्री पुत्रमतिस्वाहा
ॐ श्री निविप्रस्वाहा ॥ ॐ श्री नृमस्वाहा ॥ ॐ श्री धिप्रिप्रस्वाहा ॥ ॐ श्री वृमस्वा
हा ॥ ॐ श्री उतत्रतत्रस्वाहा ॥ ॐ श्री खल्वमस्वाहा ॥ ॐ श्री तर्तत्रस्वाहा ॥ ॐ श्री ता
नोत्रयत्तुमा रागवती वसुधा रातामधवलिसहानका वलमुक्तिं कलि

स्वाहा॥ उं श्री वज्र वज्र स्वाहा॥ उं श्री महा वज्राय स्वाहा॥ उं श्री आवरुनी स्वाहा॥
 उं श्री पुवरुनी स्वाहा॥ उं टर्क २ स्वाहा॥ उं श्री ० कर्क २ स्वाहा॥ उं श्री उर्क २ स्वाहा॥ उं
 श्री रुर्क २ स्वाहा॥ उं श्री वर्य लि स्वाहा॥ उं श्री पुवर्य लि स्वाहा॥ उं श्री तिर्या हु निः
 स्वाहा॥ उं श्री वज्र धर सा गत्र नि धा य त था ग त स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥
 उं श्री त था ग त स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥ उं श्री वज्र स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥ उं
 श्री धर्म स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥ उं श्री रं द य स ल्य म नू स म रं स्वाहा॥ उं श्री गु

१५

र्वितीशु वनयसु निमहा ग रा श्री स्वाहा॥ उं श्री महा मं त म ति स्वाहा॥ उं श्री
 महा य सि म ति स्वाहा॥ उं श्री सर्व रु तं व म क रि स्वाहा॥ उं श्री सर्व इ व म कि
 रु नि स्वाहा॥ उं श्री सर्व स क वि ना म नी दं रु इ स्वाहा॥ उं श्री आ ग ह्वा ग
 ह्वा म य म नू स म रं स्वाहा॥ **य त्रि यु र्दं** ॥ उं श्री व स ध म रं स्वाहा॥ उं श्री व स ध
 म नी य स्वाहा॥ उं श्री वज्र ध म रं स्वाहा॥ सा ग त्र नि धा य त था ग त य स्वा
 हा॥ उं श्री ० ला द वी य स्वाहा॥ उं श्री य म ध म रं य स्वाहा॥ उं श्री वज्र ध म रं य स्वा

हा॥ उं गी ऊं रं उलं दाय स्वाहा॥ उं गी रुं रं याल नागवाजाय स्वाहा॥ उं
 गी गुं काये स्वाहा॥ उं गी मृगुं काये स्वाहा॥ उं गी वृं दका नाये स्वाहा॥ उं
 गी स्रं स्वये स्वाहा॥ उं गी मौं मा निरुं दाय स्वाहा॥ उं गी यूं रं दाय स्वाहा॥ ११
 उं गी धं नं दाय स्वाहा॥ उं गी वैं शं मनाय स्वाहा॥ उं गी विं विं कुं न्निन
 स्वाहा॥ उं गी कलिं मानं स्वाहा॥ उं गी मुखं दाय स्वाहा॥ उं गी वृं दाय
 स्वाहा॥ उं गी मं दालं श्रीं रुं रं नि वासिनीय स्वाहा॥ ॥ शक नूत ॥

॥ यंत्रायदायप्रज्ञा ॥ शुक्ति ॥ अगवनिवप्रज्ञानं ॥ ज्ञानंमूर्तिनमाभिगगः
लगतिमनाहं भावनंतिर्यग्गतिः ॥ अमंमगुलानिधनं कायनं प्रवद्वटं
वद्वटं नधनममुद्विष्टागं प्रवद्वटं ॥ वलिमदु ॥ अगवप्रज्ञा ॥ अमं व
लि गटं २ त्वं १ खादि २ दानयतं धर्मगति संमदकामा भक्तिपुष्टि
प्रज्ञां कुरु स्वस्ति स्वाहा ॥ ॥ यंत्रायदायप्रज्ञा ॥ शुक्ति ॥ खानता ॥ क
ल्यादि तनेयलियथमाना याधप्रया विविधनतप्रयुक्तमया धर्मुक

गानैः पुरुषवर्गसहस्रैर्वर्षं तां सर्वं लोकजननीं युवमाप्तिरुक्ता ॥ उन्मृष्ट
 भागस्यैः सुखं नतकदाया दारिद्र्यं इह खलु वाहनमापि नो भो गाम्य
 वृषगुणयुक्तं गतवर्षं सर्वं ददाति तव पादयुगं नमामि ॥ मङ्गल ॥ १०
 त्वं देवी सर्वगुणैः प्रसूता ॥ यतः का कथं ॥ ॥ यत्कालिने नमो ल
 धिलः स्वानतनः ॥ यत्कालिने नमो ल ॥ आशिषोदः ॥ विष्णु नमः ॥
 यतः स्वतः कातः ॥ यतः स्वतः ॥ यतः स्वतः ॥ यतः स्वतः ॥ यतः स्वतः ॥

१ शिवे स्य वीरगर्भ मंदल
 नीयस्व फोर्वा विप्र मुरु म्नादि

तत्कालः कातः स्वानविद्यः ॥ निरायः अलं पालनः ॥ यतः ॥ ॥
 ॐ ति वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥
 यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥
 यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥
 यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥
 यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥
 यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥ यतः ॥

॥ वसुधा कर्माणि ॥ अतनवुलाशमसु^{ला}न ॥ अतनजु^{ला}य^{ला}वतकारः
 र्थ ॥ मसुलविमर्क^{ला}मसुनन ॥ सुवृद्धक^{ला}मयुजा ॥ अतन^{ला}वतकारः
 कसालियुजा ॥ मसुयवक^{ला}मसुयक ॥ ॐ ॥ गुरु ॥

१७

सिधोऽयम ॥ ५८ ॥

॥ सतिरुद्रवकन ॥ यावज्जीवकधर्मक^{ला}सकतनवा^{ला}अदाना^{ला}मकं ॥ ॥ रुनिष्यपनि
 दृमिसनरु^{ला}रुतसा^{ला}जिवदतालं^{ला}ध्वनधलनपि^{ला}अथवासरु^{ला}तसा^{ला}अदाना^{ला}
 विधलनपि ॥ ॥ एका^{ला}गुमानशनधनकावनवसू^{ला}नवा^{ला}पुर्णुकेनातिद
 र्थ^{ला}पातिवर्द्धपनिषाग^{ला}जिकायेकसमर्थकननाताधर्म^{ला}पुर्णु^{ला}नादव
 सवजसुवर्त ॥ ॥ रुनिष्यपनिथथिन्न^{ला}गीवसू^{ला}नादवीया^{ला}वनजा^{ला}डा^{ला}डा^{ला}
 गाले^{ला}पुलीदकया^{ला}जीवकायमइ^{ला}ग^{ला}थथडा^{ला}आत्मा^{ला}अ^{ला}थमवया^{ला}आत्मा^{ला}उतिशाल

पाउनानाधर्मयाखंडहाउकहाउसीसानउच्चनिहउगुलिसवलनपाउ। मदाहर्ममा
 नयाहाउधवलपिधक गुनसननिष्यमागजा। क्लादशविश्राम॥ ॥ षट्कुजापी
 गवकुएकमुखाननम कतिली सधपथमकुजननिधिवनद्वितीयन
 वनमऊली लसीयनन थागतवदना। वामपथमकुजनरुदघटद्वितीः २०
 यनधाममऊली लसीयनपक्कापुक्ककधानली॥ वलितासनासर्वालीकानरु
 पिता। नवजीवनसंपन्नारुगवतीवसंधानादी॥ ॥ रुनिष्यपानिधमपवम

ध्वनीरुयगधिं अतिसुन्दरी दृष्टातखाल क्कासुवकुइयाउवां वनमकूतनपयाउ।
 वृकालादागधवलनयाउविश्राम क दृष्टाउउलाहार्त वनदमूदातयाउ। वनम
 यागकुगुमाल उगु२ध नदय ०० त्यादिनवलवियाउविश्राम क हर्नानि
 कालादागन वनमऊ लिकाहाउ। वनम२ यागनउवनवियाउविश्राम क
 हर्नास्वकालादागगुलिंनथगतयातनमुक्कावयादीविश्राम क। हर्नदलपायाम
 कालादान मंगलगुकलथाजाहाउ। रंसायागमंगलयाहाउविश्राम क हर्नीन

कालादातगुलि वायुयीजाडाउ जीवात्मादकार्म उद्धारयाडाउवां दनंस्वकालादा
 तसपह्नापूरुके धारवीजाडाउ अरुनदूतकाडा कानगुवियाडाविष्काक॥
 नांयुपाकुति काताउल लितामनयाडाउ अनकवन्नया तिसाननियाउ
 जीवनमपन्नइयाउ अ तिमनलि तिमयदयावेसइयाउ अतिसाराया २१
 मानयाडाउविष्का थर्थिन्नपत्रपत्रमन्त्री वसूधामादवीया सवायाउ पूजाया
 उवतधनपि थुलोकयसख सयकिलाय पललाक १ उन्नपत्रमन्त्रीयाख्या

नग मा कपदलायुधक रगवानं सचदुष्टदपनियात अरुदयकागुखंडूयूला म
 इयूलाधक सदिदतयमतधक ॥ वृंतिग्रीवसूधानावतसंकयकथसमाफ ॥
 धनवतका गालनक ॥ ल खड्डुलत ॥ वजनधि ॥ वतकाता ॥ वतनवूलाउ
 मलुलसत ॥ धनवकोने तस्यअर्धयो १ हपायागुलिर्न निष्ठाधिवासन ला
 दाऽनिवका ॥ सूरका जानक थकालिनमलु लथिल खानतन विमर्जन ॥ ॥

आशा भद्रका

3

ASIM ARCHIVES

(सति कुरु त्वकनं) ॥ यावच्चैव जीवच्छर्माश्च न सच्छर्माश्च शुद्धावगुम
 कं ॥ इति ध्यायति इति स नरुलाहेतसा जीवनवदवयवमनं ध्वनध्वनलपि
 मृधवासरुमसा शुद्धावगुमसा ध्वनलपि ॥ ॥ उक्तायमानेन ध्वनेन ताव
 ग्वसुधायया पूरु कर्मातिदर्व्यं पालिवद्ध परिव्याग शिकाः
 यक ४ समस्त नानाः धर्मकर्तृत्वा वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ इति ध्या
 यति धर्माश्च जीवच्छर्माश्च विद्या यत जाहा उवाचैः पालिवद्धाया जीव
 कायमइ गेयधधउज्जुत्मा अर्थं मितया आत्मा इति लालपाउ नानाधः

२ पायक म्मि दति.

मर्मयास्य दृढाशं दृढाशं संसाकडद्यात्रशुआगुलिसुचलनपाउं श्रुतश्रु
 धनलपिदूनधक गुनूशं निश्यागाम्माह्लादशं विज्ञात ॥ ० ॥ धन
 पुनकोताउतकं ॥ ॥ अर्थ ॥

सकवत ॥ ५ ॥ रुयात वज्रिलसविजपा २
 कमित्यकं कलसस्यनं गुण ५ मन्तिलीया

सतिवर्नं ॥ ५ ॥ रुयायमानधुका रुमात्रि

रुमारिखजा ॥ ५ ॥ ५ ॥ जलमसिषा (पुका
 गुरुयात ॥ ५ ॥ ५ ॥ धिवार्तमाल

५ ॥ ५ ॥

५ ॥ ५ ॥

कलसस्यपाज्य